आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711
पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2021-23

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 9 अंक : 2 अक्टूबर, 2021 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग

कुलपति सन्देश

बैकयार्ड मुर्गीपालन : पशुपालकों की अतिरिक्त आय का स्रोत

fiz; Ik'kikyd ,oa fdlku Hkkb;ksa ,oa cgukA jke&jke lkA

पिछले चार दशकों में देश में मुर्गीपालन एवं उत्पादन में जबरदस्त वृद्धि हुई है, परन्तु ग्रामीण क्षेत्रों में मुर्गीपालन व्यवसाय अभी भी पिछड़ा हुआ है, जिसके कारण अभी भी कुक्कुट उत्पादों की उपलब्धता एवं मांग में काफी बड़ा अंतर है। अण्डा उत्पादन में भारत का तीसरा तथा कुक्कुट मांस उत्पादन में छठा स्थान है। वर्तमान में प्रति व्यक्ति वार्षिक 180 अण्डों की मांग के मुकाबले भारतवर्ष में 70 अण्डों की उपलब्धता है। इसी प्रकार प्रति व्यक्ति वार्षिक 11 किग्रा. मांस की मांग के मुकाबले 3.8 किग्रा. मांस की उपलब्धता है। देश के ग्रामीण क्षेत्रों के लिए प्रोटीन व ऊर्जा की प्रति व्यक्ति आवश्यकता को पूरा करने के लिए पोल्ट्री, मीट व अंडे सबसे अच्छे व सस्ते स्रोत हैं। जनसंख्या में वृद्धि, जीवनचर्या में परिवर्तन, खाने–पीने की आदतों में परिवर्तन, तेजी से शहरीकरण, स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता व युवा जनसंख्या के बढ़ते आकार आदि के कारण कुक्कुट उत्पादों की मांग में जबरदस्त वृद्धि हो रही है। इसलिए इस मांग को पूरा करने के लिए सीमांत व भूमिहीन गरीब मजदूरों को अतिरिक्त आय के स्रोत के लिए बैकयार्ड मुर्गीपालन व्यवसाय शुरू करना चाहिए। यह कम लागत व अधिक दाम वाला उद्यम है। बैकयार्ड मुर्गीपालन घर के आंगन या घर के पिछवाड़े में खाली पड़ी जगह पर आसानी से किया जा सकता है। इसे महिलाओं, बच्चों व अन्यों के द्वारा आसानी से प्रबंधित किया जा सकता है। यह व्यवसाय घर की महिलाओं को आर्थिक व सामाजिक रूप से सशक्त बनाने में मदद करता है तथा खाद्य सुरक्षा का भी समाधान करता है। देश में कुपोषण व गरीबी को दूर करने के लिए पारम्परिक मुर्गीपालन अथवा घर के पिछवाड़े में मुर्गीपालन की पद्धति पुराने समय से चली आ रही है। इस प्रकार के मुर्गीपालन में 20–30 मुर्गियों का समूह एक परिवार द्वारा पाला जा सकता है। बैकयार्ड मुर्गीपालन कम लागत वाला व्यवसाय है, जिसमें मुर्गियां आहार के रूप में हरे चारे, घर की बची हुई फल सब्जियों के छिलके, अनाज, कीड़े व मकोड़े आदि खाकर जीवन यापन करती हैं, लेकिन अधिक उत्पादन के लिए इन मुर्गियों को कुछ अतिरिक्त आहार जैसे–मक्का, बाजरा, चावल व कैल्शियम आदि दे सकते हैं। बैकयार्ड मुर्गीपालन में रोग प्रतिरोधक क्षमता के साथ–साथ प्रतिकूल परिस्थितियों को सहन करने की क्षमता भी अधिक होती है। पशुपालक भाई–बहन इस व्यवसाय को अपनाकर अतिरिक्त आय अर्जित कर सकते हैं तथा घर के आस–पास खाली पड़ी भूमि का सदुपयोग कर अपनी आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकते हैं।

प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग

माननीय राज्यपाल, राजस्थान श्री कलराज जी मिश्र की पुस्तक ''संविधान, संस्कृति और राष्ट्र'' के जोधपुर में हुए लोकार्पण अवसर पर वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग सहित प्रदेश के विभिन्न विश्वविद्यालय के कुलपति

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।
–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

विश्वविद्यालय के योजना मण्डल की प्रथम बैठक का आयोजन

शिक्षा, अनुसंधान व प्रसार के क्षेत्र में होंगे नवाचार

वेटरनरी विश्वविद्यालय के योजना मण्डल की प्रथम बैठक 7 सितम्बर को कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक में योजना मण्डल के प्रमुख सदस्य राजुवास के संस्थापक एवं पूर्व कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत, प्रो. ए.सी. वार्ष्णेय, पूर्व कुलपति, उ.प्र. पंडित दीन दयाल उपाध्याय, पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय एवं गो–अनुसंधान संस्थान (दुवासु), मथुरा, प्रो. आर.के. सिंह, पूर्व निदेशक एवं कुलपति आई. वी.आर.आई. इज्जतनगर, बरेली एवं डॉ. उमेश शर्मा पूर्व संयुक्त निदेशक, पशुपालन विभाग, राजस्थान सरकार ने शिरकत की। कुलपति प्रो. गर्ग ने कहा कि विश्वविद्यालय में योजना मण्डल के गठन से विश्वविद्यालय को शिक्षण, अनुसंधान एवं शोध कार्यों के सुचारू संचालन एवं सुद्धढ़ीकरण को नये आयाम मिलेंगे। विश्वविद्यालय ने अल्प समय में अपने कार्यक्षेत्र को बहुत व्यापक किया है। जिसमें राज्य सरकार का पूरा सहयोग रहा है। विश्वविद्यालय को पशुपालकों, किसानों एवं छात्रों के हितों को ध्यान रखते हुए भविष्य की कार्य योजना बनाकर सुनियोजित तरीके से गतिविधियों को अंजाम देना होगा, ताकि इन क्षेत्रों में प्रगति हासिल हो सके। बैठक में योजना मण्डल के माननीय सदस्यों ने विभिन्न वित्तपोषित संस्थाओं के द्वारा नई परियोजनाओं के माध्यम से विश्वविद्यालय के सुद्धढ़ीकरण, छात्रों के रोजगार सृजन हेतु उद्यमिता के विभिन्न क्षेत्रों को बढ़ावा देने, विभिन्न संस्थाओं से आपसी करार को क्रियाशील मोड पर लाने, पशुओं के विभिन्न रोगों की रोकथाम हेतु डायग्नोस्टिक किट विकसित करने, पशुउत्पादों का मूल्यसंवर्द्धन करने, छात्र कल्याण हेतु स्पोर्टस एवं साहित्यिक गतिविधियों को बढ़ावा देने, पशुओं के आपात स्थिति में ईलाज हेतु क्रिटिकल केयर एवं ट्रोमा सेन्टर विकसित करने जैसे महत्वपूर्ण सुझाव दिये गये। कुलसचिव अजीत सिंह राजावत, वित्त नियंत्रक डॉ. प्रताप सिंह पूनिया सहित विश्वविद्यालय के डीन–डायरेक्टर, पशु अनुसंधान केन्द्रों के मुख्य अन्वेषक एवं अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

राजस्थान गौ सेवा समिति के प्रान्तीय अधिवेशन में राजुवास द्वारा विचार गोष्ठी व प्रदर्शनी का आयोजन

श्री मनोरमा गोलोकतीर्थ, नन्दगांव, तहसील रेवदर जिला सिरोही में श्री राजस्थान गौसेवा समिति की ओर से प्रदेश में संचालित गौशाला संचालकों के वार्षिक प्रान्तीय अधिवेशन परम श्रद्धेय गो ऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंद महाराज के पावन सानिध्य में पूज्य श्री दिनेश गिरी महाराज, अध्यक्ष, राजस्थान गौसेवा समिति की अध्यक्षता में तथा पूज्य संतों की उपस्थिति में दिनांक 21 से 22 सितम्बर, 2021 को आयोजित हुआ। अधिवेशन के मुख्य अतिथि श्री प्रमोद जैन भाया, माननीय गोपालन मंत्री, राजस्थान सरकार, विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री सुखराम बिश्नोई, माननीय वन एवं पर्यावरण मंत्री, राजस्थान सरकार, श्री संयम लोढ़ा, माननीय विधायक, सिरोही, प्रो. सतीश के. गर्ग, माननीय कुलपति, राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर उपस्थित रहे। इस अवसर पर डॉ. लालसिंह, निदेशक गोपालन विभाग, प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर एवं डॉ. विनोद कालरा, संयुक्त निदेशक, पशुपालन विभाग, सिरोही की भी उपस्थिति रहीं। विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा गौ संचालकों हेतु विशेषज्ञ संगोष्ठी एवं विश्वविद्यालय स्तरीय प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया।

जयपुर में नाबार्ड की बैठक में कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने की शिरकत

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के कुलपति प्रो (डॉ.) सतीश के. गर्ग ने प्रदेश के कृषि और वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपतियों के बीच दिनांक 28.9.2021 को नाबार्ड द्वारा जयपुर में आयोजित कृषि एवं वेटरनरी कुलपतियों की बैठक में भाग लिया। कुलपति प्रो. गर्ग ने नाबार्ड के चेयरमैन डॉ. जी. आर. चिंतला से पशुचिकित्सा के क्षेत्र में पशुपालक कल्याण की विभिन्न परियोजनाओं पर चर्चा की।

राजुवास बना मल्टी फैकल्टी विश्वविद्यालय

डेयरी और खाद्य प्रौद्योगिकी महाविद्यालय प्रारंभ

वेटरनरी विश्वविद्यालय के अन्तर्गत बीकानेर परिसर में डेयरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय एवं बस्सी, जयपुर में डेयरी एवं खाद्य प्रौद्योगिकी महाविद्यालय शैक्षणिक सत्र 2021–22 हेतु संघटक महाविद्यालय के रूप में प्रारंभ हो गये हैं। जेट परीक्षा की मेरिट लिस्ट अनुसार इन दोनों महाविद्यालयों में प्रवेश दिया गया है। डेयरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, बीकानेर में बी.टेक इन डेयरी टेक्नोलॉजी में 40 सीटों हेतु प्रवेश प्रक्रिया जारी है। इसी तरह बस्सी, जयपुर में बी.टेक. इन डेयरी टेक्नोलॉजी एवं बी.टेक. इन फूड टेक्नोलॉजी में 40–40 सीटों हेतु प्रवेश प्रक्रिया जारी है। कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने बताया कि राज्य सरकार द्वारा दोनों महाविद्यालय के लिए प्रशासनिक एवं वित्तीय स्वीकृति जारी की जा चुकी है। इन दोनों महाविद्यालयों के शुरू होने के साथ ही वेटरनरी विश्वविद्यालय बहु संकाय विश्वविद्यालय बन गया है।

कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने किया पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही का अवलोकन

वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग द्वारा पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही का 21 सितम्बर को अवलोकन किया गया। निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ. राजेश कुमार धूड़िया ने केन्द्र द्वारा संचालित विभिन्न गतिविधियों से कुलपति को अवगत कराया। पशु विज्ञान केन्द्र में संचालित पशु रोग निदान सेवा के अन्तर्गत कुलपति महोदय द्वारा पशुपालकों के लिए दूध की गुणवत्ता की जांच करने वाली ऑटोमेटिक मिल्क एनालाइजर मशीन का फीता काटकर उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर कुलपति महोदय ने पशुपालकों को पशुपालन के क्षेत्र में नवाचार व पशुपालन के विभिन्न वैज्ञानिक तरीके अपनाने को कहा जिससे पशुपालकों की आर्थिक स्थिति में सुधार हो सके, साथ ही पशुपालकों को पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही द्वारा संचालित प्रशिक्षण शिविरों में ज्यादा से ज्यादा भाग लेने को कहा ताकि विषय विशेषज्ञ से सीधे जुड़कर और समस्याओं का निराकरण कर सके। इस अवसर पर प्रभारी अधिकारी डॉ. सुदीप सोलंकी, पीएफए सचिव, अमित देवल और केन्द्र के टीचिंग एसोसिएट डॉ. दीपक गिल, डॉ. नरसी राम गुर्जर सहित स्टाफ एवं पशुपालक उपस्थित रहे।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर में दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

वैज्ञानिक तरीके से पशुपालन करके पशुपालक अधिक आमदनी प्राप्त कर सकते हैं: कुलपति प्रो. गर्ग

वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर द्वारा संचालित पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर द्वारा वैज्ञानिक बकरी पालन एवं प्रबंधन विषय पर दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन दिनांक 20–21 सितम्बर, 2021 को किया गया। समापन अवसर पर कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने महिला पशुपालकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि परम्परागत पशुपालन में नवीनतम तकनीकों को जोड़कर वैज्ञानिक तरीके से पशुपालन करके पशुपालक अधिक आमदनी प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि वेटरनरी विश्वविद्यालय पशुपालन की नवीनतम वैज्ञानिक तकनीकों को गांव, ढाणी में अन्तिम छोर पर बैठे पशुपालकों तक पहुंचाने के लिए संकल्पबद्ध है। प्रो. गर्ग द्वारा पशु विज्ञान केन्द्र में स्वचालित मिल्क ऐनालाइजर मशीन का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर कुलपति महोदय द्वारा बकरियों के प्रमुख रोग एवं रोकथाम विषयों पर केन्द्र द्वारा प्रकाशित फोल्डर का भी विमोचन किया गया। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, संयुक्त निदेशक कृषि विभाग, जोधपुर वी.के. पाण्डेय व उप निदेशक (आत्मा),जोधपुर हरीश मेहरा, प्रभारी डॉ. बी.एस. सैनी, डॉ. मनीश सोनगरा एवं डॉ. अमित चोटिया उपस्थित रहे।

अंतर्राष्ट्रीय पोषक अनाज वर्ष 2023 के परिप्रेक्ष्य में पोषण वाटिका महाअभियान एवं वृक्षारोपण का आयोजन

वेटरनरी विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्र, नोहर (हनुमानगढ़) द्वारा गोद लिये गये गांव रामगढ़ में 17 सितम्बर को अंतर्राष्ट्रीय पोषक अनाज वर्ष 2023 के परिप्रेक्ष्य में पोषण वाटिका महाअभियान एवं वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, श्री नरेंद्र सिंह तोमर द्वारा किया गया, जिसका सीधा प्रसारण एलसीडी स्क्रीन पर किसानों को दिखाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पंचायत समिति, नोहर के उपप्रधान श्री रामकुमार सैनी थे। भूपसिंह सहारण, उप महाप्रबंधक, इफको, जयपुर, रामगढ़ के उपसरपंच श्री रणजीत व कैप्टन हरिसिंह खींचड़ भी उपस्थित रहे। कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रसार शिक्षा विशेषज्ञ अक्षय घिंटाला, पशुपालन विशेषज्ञ डॉ. रामचन्द्र सहारण सहित 71 कन्याओं सहित 134 किसानों ने भाग लिया।

राजुवास ई–पशुपालक चौपाल का आयोजन

सही समय पर पशु प्रजनन आर्थिक उन्नति की धुरी

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा दिनांक 8 सितम्बर को राज्यस्तरीय ई–पशुपालक चौपाल में गाय–भैंसों में हीट (ताव) की समस्या व समाधान विषय पर विशेषज्ञ प्रो. अतुल सक्सेना ने पशुपालकों से संवाद किया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने चौपाल में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय का यह प्रयास है कि आधुनिक तकनीकों का उपयोग करते हुए पशुपालकों को घर बैठे पशुपालन की नवीनतम वैज्ञानिक तकनीकों को पहुँचाया जाये ताकि पशुपालक अपनी आर्थिक उन्नति में बढ़ोतरी कर सकें। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने विषय प्रवर्तन करते हुए बताया कि पशु प्रजनन में निरंतरता बनाये रखने के लिए पशुओं में ताव या हीट की पहचान एक बहुत उपयोगी पड़ाव है, सही समय पर ताव की पहचान होने पर पशुओं को प्राकृतिक या कृत्रिम गर्भाधान के माध्यम से ग्याभिन करवा सकते हैं एवं आर्थिक नुकसान से बच सकते हैं। आमंत्रित विशेषज्ञ प्रो. अतुल सक्सेना विभागाध्यक्ष, मादा पशुरोग विज्ञान विभाग, उ.प्र. पंडित दीनदयाल उपाध्याय पशुचिकित्सा महाविद्यालय, मथुरा ने विस्तृत चर्चा करते हुए बताया कि गायों में भैंसों की तुलना में ताव के लक्षण स्पष्ट होते हैं। पशुओं की स्थिर या स्टेंडिंग हीट की अवस्था से 12 घंटे बाद गर्भाधारण करवाना चाहिए। भैंसो में ताव के लक्षण स्पष्ट नहीं होते हैं अतः व्यावसायिक भैंस पालक टीजर सांड की सहायता से ताव की पहचान कर सकते हैं। सामान्य प्रसव के बाद कम से कम 50 दिन के अन्तराल के बाद ताव में आने पर गाय–भैंसों को ग्याभिन करवाना चाहिए। अण्डादानी में सिस्ट बनना एवं हार्मोन्स का असंतुलन होना पशुओं में लगातार अनियमित ताव का मुख्य कारण होता है अतः ऐसी अवस्था में पशुचिकित्सक से जांच करवाकर पशुओं का ईलाज करवाना चाहिए। प्रो. सक्सेना ने पशुपालकों की प्रजनन संबंधी जिज्ञासाओं का इस चौपाल के माध्यम से त्वरित निवारण किया।

परजीवियों को नियन्त्रण करके भेड़-बकरियों को नुकसान से बचाएं

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा 22 सितम्बर को राज्य स्तरीय ई–पशुपालक चौपाल में "भेड़–बकरियों में परजीवी रोग" विषय पर विशेषज्ञ प्रो. राजेश कटोच ने पशुपालकों से संवाद किया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा संचालित ई–पशुपालक चौपाल के माध्यम से पशुपालक घर बैठे लाभान्वित हो रहे हैं। पशुपालक भाई विशेषज्ञों के साथ अधिक से अधिक समस्याओं को साझा करके एवं उनके द्वारा बताए गए सुझावों को अपनाकर पशुओं को नुकसान से बचा सकते हैं। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि भेड़–बकरियों में विभिन्न प्रकार के अन्तः एवं बाह्य परजीवियों के संक्रमण से शारीरिक कमजोरी एवं उत्पादन क्षमता में लगातार गिरावट आती है तथा पशुपालकों का बीमारी को कारण समझ नहीं आता है अतः पशुपालक समय पर पशुओं की जांच करवाकर कृमिनाशक दवाइयों के माध्यम से इस रोग से निजात पा सकते हैं। आमंत्रित विशेषज्ञ प्रो. राजेश कटोच, विभागाध्यक्ष, पशु परजीवी विभाग, पशुचिकित्सा और पशुपालन संकाय, शेर–ए–कश्मीर कृषि विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, जम्मू ने विस्तृत चर्चा करते हुए बताया कि भेड़ों एवं बकरियों में बाह्य एवं अन्तः दोनों प्रकार के परजीवी पाए जाते हैं। बाह्य परजीवियों में मुख्यतः चींचड या कीलनी, पिस्सु, मक्खी, मच्छर आदि हैं जबकि अन्तः परजीवियों में पर्णकृमि, फीताकृमि एवं गोलकृमि प्रमुख है। चूंकि भेड़–बकरी, नदी–नालों एवं पोखरों के किनारे घास चरते हैं अतः इन परजीवियों के लार्वा घास एवं पानी के माध्यम से शरीर में प्रवेश कर जाते हैं। शरीर में परजीवी यकृत एवं आंतों के साथ–साथ शरीर के विभिन्न अंगों को प्रभावित करते हैं। पशुओं में संक्रमण को रोकने के लिए समय–समय पर पशुचिकित्सक की सहायता से गोबर की जांच करवाकर उपयुक्त कृमिनाशक दवा से पशुओं का ईलाज करवाएं।

विश्व रेबीज दिवस

श्वानों में रेबीज निरोधक टीकाकरण शिविर का आयोजन

विश्व रेबीज दिवस पर वेटरनरी कॉलेज और केनाइन वेलफेयर सोसाइटी के तत्वावधान में दिनांक 28 सितम्बर को एक दिवसीय टीकाकरण शिविर का आयोजन किया गया एवं पालतु श्वानों को रेबीज निरोधक टीके लगाए गये। निदेशक क्लिनिक प्रो. ए.पी. सिंह ने बताया कि कुल 55 पालतु श्वानों को निःशुल्क रेबीज निरोधक टीके लगाए गये तथा 43 श्वानपालकों को रेबीज के टोकन वितरीत किये गये। प्रो. सिंह ने विद्यार्थियों एवं आमजन को रेबीज बीमारी की भयावहता एवं बचाव के उपायों से अवगत कराया। प्रो. आर.के. तंवर ने रेबीज रोग पर व्याख्यान दिया। विश्वविद्यालय के संगठक महाविद्यालय पी.जी. आई.वी.ई.आर, जयपुर में आयोजित टीकाकरण शिविर में कुल 27 श्वानों एवं बिल्लियों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया एवं 20 पशुओं को रेबीज रोग की रोकथाम हेतु निःशुल्क टीकाकरण किया गया। इस अवसर पर पशुजन्य रोग निदान, निगरानी एवं निवारण केन्द्र द्वारा रेबीज रोग पर व्याख्यान का आयोजन भी किया गया। शिविर प्रभारी डॉ. धर्मसिंह मीणा थे

यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलिटी

जयमलसर एवं गाढ़वाला में कौशल विकास गोष्ठी का आयोजन

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा यूनिवर्सिटी–सोशल रिस्पोंसिबिलिटी के तहत गोद लिए गांव जयमलसर एवं गाढ़वाला में 29–30 सितम्बर को राजस्थान कौशल एवं आजीविका विकास निगम, बीकानेर के सहयोग से कौशल विकास गोष्ठी का आयोजन किया गया। राजस्थान कौशल एवं आजीविका विकास निगम, बीकानेर के जिला समन्वयक, रामकुमार एवं काउंसलर विनोद कुमार ने राजस्थान कौशल एवं आजीविका विकास निगम के विभिन्न पाठ्यक्रमों, अनिवार्य योग्यता, प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना, दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना इत्यादि के बारे में विस्तार से बताया तथा अधिक से अधिक युवाओं को इन योजनाओं से जुड़ने के लिए प्रेरित किया। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्रवण गोदारा ने कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रमों से ग्रामीण युवाओं में विभिन्न योजनाओ के प्रति जागरूकता बढ़ती है। गोष्ठी में ग्रामीण युवाओं और विद्यार्थियों ने सक्रिय भागीदारी निभाई। इस अवसर पर सरपंच प्रतिनिधि विक्रम सिंह, उपसरपंच देवाराम, कृपालदान, मनोज पुरोहित उपस्थित रहे। गोष्ठी का आयोजन समन्वयक, डॉ. नीरज कुमार शर्मा ने किया।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू)

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ द्वारा 3, 7, 18, 22 एवं 25 सितम्बर को आयोजित एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण तथा 14–15, 23–24 एवं 29–30 सितम्बर को आत्मा योजनान्तर्गत दो दिवसीय ऑफलाइन प्रशिक्षण शिविरों में 90 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ (श्रीगंगानगर)

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 4, 8, 13, 20 एवं 25 सितम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण एवं 27–28 सितम्बर को आत्मा योजनान्तर्गत दो दिवसीय ऑफलाइन प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 170 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर)

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया–लाडनूं द्वारा 3, 6, 14, 17, 20 एवं 23 सितम्बर को ऑनलाइन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 144 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर)

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 2, 6, 9, 13, 17, 21, 24 एवं 27 सितम्बर को आयोजित एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 183 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक द्वारा 2, 6, 13, 18, 21 एवं 28 सितम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 155 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 6, 9, 14, 18, 23 एवं 25 सितम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 146 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर)

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 2, 9, 14, 20, 24 एवं 28 सितम्बर को आयोजित ऑनलाइन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 286 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा 4, 7, 9, 13, 15, 18 एवं 21 सितम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 178 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़)

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुन्दा द्वारा 8, 15, 22 एवं 29 सितम्बर को आयोजित एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण एवं 6–7, 13–14, 20–21 एवं 27–28 सितम्बर को आत्मा योजनान्तर्गत दो दिवसीय ऑफलाइन प्रशिक्षण शिविरों में 247 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही द्वारा 4, 7, 9, 13, 15, 24, 27, 29 एवं 30 सितम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 229 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 3, 8, 15, 23, 27 एवं 30 सितम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 141 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 4, 7, 15, 18, 22, 24 एवं 29 सितम्बर को ऑनलाइन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 168 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 17, 18, 22 एवं 27 सितम्बर को आयोजित एक दिवसीय ऑनलाइन तथा दिनांक 8–9, 14–15, 20–21, 24–25 एवं 28–29 सितम्बर को आत्मा योजनान्तर्गत दो दिवसीय ऑफलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 242 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 14 एवं 25 सितम्बर को एक दिवसीय कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 45 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

पशुओं में अपच से उत्पादन पर पड़ता है प्रतिकूल प्रभाव

पशुओं को होने वाले सभी रोगों में पाचन संबंधी रोग सामान्यतः होते हैं उनमें से अपच दुधारू जानवरों में होने वाली एक समस्या है। अपच पशुओं में पाचन क्रिया बिगड़ने का मुख्य कारण अधिक मात्रा में अपचित भोजन रूमेन में एकत्रित होने से हो जाता है। इसके कारण रूमेन की कार्यक्षमता व उसमें उपस्थित सूक्ष्म जीवाणु प्रभावित होते हैं जिसके कारण पशुओं में पाचन खराब व आफरा आदि समस्याएं उत्पन्न होती हैं।

Ik'kvk e: vip dk dkj.k%

- ❖ 0kkrkoj.kh; dkj.k% पशुओं में अधिक तापमान का होना तथा मानसून के समय मिलने वाला नम हरा चारा पशुओं को अधिक खिलाने से उनमें अपच की समस्या उत्पन्न होती है।
- ❖ ic/ku dkj.k % अधिक मात्रा में दाना व कम गुणवत्ता वाला हरा चारा/दलहनी चारा खिलाने से तथा खाद्यान्न के प्रकार में अचानक परिवर्तन करना।
- ❖ Ik'k dkjd % पशुओं की अधिक उम्र का होना व प्रसव के बाद जेर खा लेना।

Ik'kvk e: vip dk idkj %

- ❖ {kkjh; vip& पशुओं के द्वारा अत्यधिक मात्रा में प्रोटीनयुक्त पोषण (ज्वार, बाजरा, दालें) अथवा गैर प्राटीन नाइट्रोजनयुक्त पदार्थ व पशुओं की जेर खाने से क्षारीय अपच की समस्या पशुओं में देखी जाती है। इसमें रूमेन में अमोनिया का अत्यधिक उत्पादन होता है, जिससे यकृत, वृक्क एवं तंत्रिका तंत्र में गडबड़ी होने लगती है।
- ❖ vEyh; vip& इसका मुख्य कारण पशुओं द्वारा अत्यधिक कार्बोहाइड्रेड युक्त आहार खाना है जैसे पशु द्वारा अधिक मात्रा में गेंहू, मक्का, आलू, चावल आदि खाने से अम्लीय अपच होने की संभावना हो सकती है। शादियों व पार्टियों में बचा हुआ भोजन (जैसे–रोटी, पूरी, छोले आदि) अत्यधिक मात्रा में खाने से भी अम्लीय अपच हो सकता है। अत्यधिक मात्रा में स्टार्च युक्त भोजन खिलाने से बैक्टीरिया रूमेन में अधिक मात्रा में वॉलेटाईल फेटी एसिड व लेक्टिक एसिड का उत्पादन करते हैं, जिससे रूमेन एसिडोसिस एवं अपच की समस्या उत्पन्न होती है।
- ❖ oxl vip& यह समस्या वेट्रल वेगस तंत्रिका को प्रभावित करने वाले धक्के/चोट/सूजन के कारण होता है।
- ❖ lkekU; vip – पशुओं द्वारा खराब, सड़ा हुआ या फफूंद लगा हुआ चारा खा लेने से भी अपच की संभावना हो सकती है। कभी–कभी बीमार पशुओं में अधिक मात्रा में एंटीबायोटिक्स व सल्फा औषधियों के प्रयोग से रूमेन के जीवाणु नष्ट होने से अपच हो सकती है।

vip dk y{k.k %&अपच के कारण पशुओं में प्रदर्शित होने वाले मुख्य लक्षण जैसे पशु में भूख की कमी, पशु द्वारा जुगाली बंद कर देना, पशु को कब्ज या दस्त हो जाना, पशु को आफरा आ जाना, पशु के गोबर में बिना पचे हुए दाने/चारे का निकलना एवं पशु का सुस्त हो जाना एवं सूखा तथा सख्त गोबर करना है।

mipkj %

- ❖ अपच की पहचान होने पर खराब चारा हो तो तुरन्त बदल देना चाहिए एवं पशुचिकित्सक के परामर्शानुसार वर्ष में 3 से 4 बार कृमिनाशक दवा देनी चाहिए।
- ❖ खूंटे पर बंधे रहने वाले पशु को नियमित व्यायाम करना चाहिए।
- ❖ हल्दी, अजवाइन, काली मिर्च, अदरक, मेथी, लौंग आदि का उपयोग पशु के वजन के अनुसार दे सकते हैं।
- ❖ मैग्नीशियम हाइड्रोक्साइड– पशुओं में अम्लीय अपच की संभावना होने पर 100 से 300 ग्राम 10 लीटर पानी में देना चाहिए या सोडियम कार्बोनेट– 01 ग्राम/कि. भार के अनुसार दिया जा सकता है।
- ❖ पशुओं में क्षारीय अपच होने पर विनेगर (सिरका) 05 प्रतिशत– 01 मि. ग्रा/कि. भार के अनुसार देना चाहिए।

अपच से पशुओं की उत्पादन क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। अतः पशुओं को खराब सड़ा हुआ या फफूंद लगा हुआ चारा नहीं देना चाहिए। साथ ही पशुओं को संतुलित आहार देने से एवं नियमित व्यायाम तथा वर्ष में 3 से 4 बार कृमिनाशक दवा देने से अपच की समस्या से पशुओं को बचा सकते हैं।

डॉ. निखिल श्रृंगी, डॉ. तृप्ति गुर्जर एंव डॉ. अतुल शंकर अरोड़ा,
पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा, मो.नं. 9782499312

पशुओं में गर्भपात पशुपालकों के लिए बड़ी समस्या

पशुओं में गर्भपात की समस्या पशुपालकों के लिए बड़ी समस्या है। गर्भपात में मादा पशु अपने गर्भकाल में पहले ही जीवित अथवा मृत बच्चे (बछड़ा/बछिया) को जन्म दे देती है। पशुओं में गर्भपात जीवाणु, विषाणु, प्रोटोजोआ, कवक के संक्रमण, संतुलित पोषक तत्वों की कमी, गलत दवाओं का उपयोग, गर्भकाल के दौरान किसी अन्य पशु, व्यक्ति अथवा वस्तु के द्वारा नुकसान पहुंचना आदि के कारण से भी हो सकता है। पशुओं में गर्भकाल के दौरान भिन्न–भिन्न कारणों व समय पर गर्भपात हो सकता हैं। इसके अनुसार गर्भपात को तीन अवस्थाओं में बांटा जा सकता है:–

xHkZdky dh igyh frekgh e: xHkZikr%

ट्राइकोमोनास फीटस प्रोटोजोआ से पशुओं में गर्भपात होता है जिसे ट्राइकोमोनियासिस भी कहते है। यह प्रोटोजोआ मुख्यता संक्रमित सांड से प्राकृतिक गर्भाधान द्वारा स्वस्थ मादा पशुओं के प्रजनन अंगों में चला जाता है। यह मादा पशुओं में पहली तिमाही में गर्भपात, बांझपन, प्रारम्भिक भ्रूण की मृत्यु तथा बच्चेदानी में मवाद जैसी समस्या पैदा करता है।

xHkZdky dh nljh frekgh e: xHkZikr%

कम्पाइलोबैक्टर फिटस जीवाणु के संक्रमण से भी पशुओं में गर्भपात की संभावना रहती है तथा इसे विब्रियासिस के नाम से जाना जाता है। यह जीवाणु मुख्यता संक्रमित सांड से प्राकृतिक गर्भाधान अथवा संक्रमित सांड के वीर्य से कृत्रिम गर्भाधान करवाने पर मादा पशुओं के प्रजनन अंगों में प्रविष्ट कर जाते हैं। इससे ग्रसित मादा पशुओं में निषेचन के कुछ दिनों बाद ही भ्रूण की मृत्यु हो जाती है तथा गर्भकाल के 4–7 माह में गर्भपात हो जाता है।

xHkZdky dh rhljh frekgh e: xHkZikr%

cqlyk ,ckjVl % इस जीवाणु के संक्रमण से तीसरी तिमाही में पशुओं में गर्भपात होता है। इसे ब्रूसेलेलोसिस रोग भी कहते हैं। यह गर्भपात की समस्या का सबसे मुख्य कारण है। यह रोग संक्रमित पशुओं से स्वस्थ पशुओं तथा मनुष्यों में भी फैलता है। यह जीवाणु मुख्यतया संक्रमित पशु से निकले स्त्राव, भ्रूण, जेर, दूध आदि में पाए जाते हैं तथा इस बीमारी का जीवाणु लगभग 2 माह तक पशुओं के गोबर में और 6 माह तक भ्रूण के ऊतकों में जीवित रहता है।

yIVkLikbjk % इस जीवाणु के संक्रमण से पशुओं में गर्भपात को लेप्टोस्पाइरोसिस कहते हैं। यह जीवाणु मुख्यतः संक्रमित पशु के पेशाब, वीर्य तथा दूध इत्यादि में पाए जाते हैं। यह बीमारी मुख्यतः संक्रमित पशु के पेशाब से संक्रमित पदार्थों जैसे कि चारा, पानी, दूध का सेवन करने अथवा कटी–फटी त्वचा, नाक तथा नेत्र श्लेष्म से स्वस्थ पशुओं तथा मनुष्यों में फैलती है। इसमें गर्भपात गर्भकाल के 6–7 महीने में होता है।

fyLVhfj;k % लिस्टीरिया मोनोसाइटोजन्स जीवाणु के संक्रमण से पशुओं में लिस्टेरियोसिस होता है। यह जीवाणु मुख्यतः संक्रमित पशु के गोबर, दूध, प्रजनन अंगों से स्रावित पदार्थों, गर्भपतित भ्रूण इत्यादि में पाया जाता है। यह जीवाणु मुख्यतः संक्रमित मृदा, साइलेज (संरक्षित हरा चारा) द्वारा पशुओं में तथा संक्रमित दूध के द्वारा मनुष्यों में प्रवेश कर जाता है। इसमें गर्भकाल के 7–9 महीने में गर्भपात होता है।

xHkZikr ls cpko dk mik;

- ❖ गर्भावस्था के समय अनावश्यक दवाओं तथा हार्मोन के उपयोग से बचें।
- ❖ गर्भावस्था के दौरान यदि पशु बीमार हो जाए तो पशुचिकित्सक की सलाह लें तथा उपचार करवाएं।
- ❖ गर्भित पशु को अन्य पशुओं से अलग रखें ताकि पशु आपस में न लड़े।
- ❖ ग्याभिन पशु को कच्ची तथा साफ सुथरे फर्श पर रखें।
- ❖ पशुओं को छायादार स्थान पर रखें, जहां पर हवा का आवागमन अच्छा हो, साथ ही पर्याप्त मात्रा में साफ पीने का पानी भी उपलब्ध हो।
- ❖ पशुओं को हरा चारा, सूखा चारा तथा दाना संतुलित मात्रा में दें।
- ❖ गर्भावस्था के दौरान बाड़े में साफ–सफाई का विशेष ध्यान दें ताकि जीवाणु, विषाणु, प्रोटोजोआ व कवक से पशुओं को बचाया जा सके।

डॉ. दीपिका धूड़िया
सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–अक्टूबर, 2021

पशु रोग	पशु प्रकार	अत्यधिक संभावना	अधिक संभावना	मध्यम संभावना	बहुत कम संभावना
ब्लू टंग रोग	भेड़	–	–	–	जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर, नागौर, पाली, सिरोही, अजमेर, सीकर, जयपुर
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	जोधपुर	–	–	–
खुरपका मुंहपका रोग	गाय, भैंस, भेड़, बकरी, ऊंट	–	–	–	गंगानगर, हनुमानगढ़, झुंझुनूं, सीकर, दौसा, भरतपुर, करौली, सवाई माधोपुर, टोंक, भीलवाड़ा, राजसमन्द, उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, बारां
गलघोंटू रोग	गाय, भैंस	–	अजमेर, धौलपुर, सिरोही, टोंक	–	गंगानगर, बीकानेर, जोधपुर, नागौर, झुंझुनूं, सीकर, बाड़मेर, भीलवाड़ा, राजसमन्द, उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, बारां, पाली, जालोर, झालावाड़
पी.पी.आर.	बकरी	जयपुर, पाली	टोंक	–	गंगानगर, बीकानेर, झुंझुनूं, सीकर, जैसलमेर, उदयपुर, सिरोही, चित्तौड़गढ़, बूंदी
माता रोग	भेड़, बकरी	झुंझुनूं	–	–	–
तिबरसा	गाय, भैंस, ऊंट	बीकानेर, जोधपुर	कोटा, उदयपुर	अजमेर, बारां	अलवर, बाड़मेर, भरतपुर, भीलवाड़ा, बूंदी, चित्तौड़गढ़, चूरू, दौसा, गंगानगर, हनुमानगढ़, जयपुर, जालोर, झालावाड़, झुंझुनूं, नागौर, प्रतापगढ़, राजसमन्द, सवाई माधोपुर, सीकर, टोंक
एवियन बोचुलिस्म	पक्षी	–	–	नागौर	–
रानीखेत	मुर्गी एवं अन्य पक्षी	–	–	–	बीकानेर

foLr`r tkudkjh d fy, lEidZ djs & ik- vkj-d-flg] vf/k"Bkrk] oVjujh dkyst] chdkuj] ,o Mk- t-ih- dPNkok] iHkkjh vf/kdkjh] ,iDl lUVjA Qku u0 0151&2543419] 2544243] 2201183 Vky Qh uEcj 18001806224

सफलता की कहानी

जागरूक पशुपालक के रूप में वर्तमान पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्त्रोत नोहर के राजेश कुमार

पशुपालन हमेशा से ही राजस्थान के किसानों का कृषि के साथ–साथ आय का प्रमुख साधन रहा है। वर्तमान में जहां बेरोजगारी की समस्या ने विकराल रूप धारण कर रखा है, ऐसे में पशुपालन व्यवसाय में रोजगार के अवसर युवाओं के लिए अपार संभावनाएं लिए हुए हैं। गोपालन को अपनी आय का स्त्रोत बनाकर सफल हुए हनुमानगढ़ जिले के नोहर तहसील के फेफाना गांव के निवासी राजेश कुमार ने नव युवकों के लिए एक मिसाल कायम की है। कृषि व्यवसाय को घाटे का सौदा कहने वाले लोगों के लिए फेफाना के इस युवा प्रगतिशील किसान ने नई नजीर पेश करते हुए यह दर्शाने का प्रयास किया है कि समेकित कृषि प्रणाली अपनाकर यही कृषि एक फायदे का सौदा साबित हो सकती है। प्रगतिशील किसान राजेश कुमार ने बताया कि संयुक्त परिवार में रहने के चलते अकेले खेती कार्य से पारिवारिक खर्च चला पाना बड़ा कठिन सा हो रहा था। करीब 2 वर्ष पूर्व वह कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर के विशेषज्ञों के पास गया और कृषि के क्षेत्र में आमदनी बढ़ाने की सलाह मांगी। इस पर केन्द्र ने राजेश कुमार को खेती के साथ डेयरी फार्मिंग अपनाने की सलाह दी। राजेश कुमार ने पशुपालन व्यवसाय को वैज्ञानिक तरीके से करने की सोची और पशुपालन की उन्नत तकनीकों की जानकारी लेने के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लिया। इन प्रशिक्षणों से राजेश कुमार को काफी फायदा हुआ, इन प्रशिक्षण के दौरान कृमिनाशक दवा का उपयोग, खनिज लवण मिश्रण की उपयोगिता, टीकाकरण, ग्याभिन पशुओं की देखभाल, पशुओं में नस्ल सुधार द्वारा दुग्ध उत्पादन में वृद्धि, संतुलित आहार इत्यादि की जानकारी प्राप्त कर, उसे अपनाया और एक सफल पशुपालन बने। वर्तमान में इनके पास 2 एकड़ जमीन के साथ 11 एच.एफ. नस्ल की गाय, 3 देशी नस्ल की गाय व 4 बछड़े–बछड़ियां हैं जिनसे प्रतिदिन 60–70 लीटर दूध उत्पादन करते हैं वे उन्नत नस्ल की गाय तैयार करके विक्रय भी करते हैं। इनकी पशुपालन से वार्षिक आय लगभग पांच लाख रूपये तक हो जाती है। राजेश कुमार एक जागरूक पशुपालन के रूप में वर्तमान पीढ़ी के लिए प्रेरणा के स्त्रोत बने हैं। **सम्पर्क–राजेश कुमार, गांव फेफाना तहसील नोहर (हनुमानगढ़)(मो. 8209335008)**

प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास, बीकानेर

निदेशक की कलम से...

अजोला पशुओं के लिए वरदान

राजस्थान की अर्थव्यवस्था में पशुधन की महत्वपूर्ण भूमिका रही है तथा पशुपालन लघु व सीमान्त किसानों और भूमिहीन मजदूरों को रोजगार के पर्याप्त व सुनिश्चित अवसर देकर अर्थव्यवस्था को ठोस आधार प्रदान करता है। जैसे–जैसे जनसंख्या बढ़ती जा रही है, वैसे–वैसे दूध की मांग भी बढ़ती जा रही है तथा कृषि के लिए जोत भी छोटी होती जा सकती है। इस कारण पशु के स्वास्थ्य व उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। प्रायः मानसून के अलावा पशुओं के लिए हरे चारे की समस्या रहती है, जिससे पशुओं की वृद्धि व प्रजनन क्षमता पर विपरित प्रभाव पड़ता है। हरे चारे के विकल्प के रूप में अजोला एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। अजोला एक जलीय फर्न है, अजोला में सभी प्रकार के खनिज पदार्थ जैसे कैल्शियम, आयरन, फॉस्फोरस जिंक, कोबाल्ट, मैग्नीशियम के अलावा विटामिन, प्रोटीन, एमीनो ऐसिड व अन्य सूक्ष्म पदार्थ पर्याप्त मात्रा में होते हैं। अजोला को पूरक राशन के रूप में पशुओं को खिलाने पर दूध उत्पादन में भी वृद्वि होती है तथा दूध में वसा की मात्रा में बढ़ोतरी होती है। रिजका व संकर नेपियर की तुलना में अजोला से 4–5 गुना उच्च गुणवत्ता युक्त प्रोटीन प्राप्त होता है। अजोला को जादूई फर्न, हरा सोना अथवा पशुओं के लिए च्यवनप्राश की संज्ञा भी दी गई है। अजोला उत्पादन की विधि बहुत आसान है तथा अतिरिक्त श्रम व विशेषता की आवश्यकता भी नहीं होती है तथा आसानी से किसी छायादार स्थान पर लगाया जा सकता है, साथ ही हर मौसम में अजोला का उत्पादन ले सकते हैं एवं वर्ष भर हरे चारे के विकल्प के रूप में काम में ले सकते है। अतः किसान भाइयों को पशुओं से अधिक उत्पादन लेने हेतु प्रोटीन युक्त अजोला खिलाना चाहिए।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर (मो. 9414283388)

RAJUVAS
e पशुपालक चौपाल
।। पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम् ।।

माह के प्रत्येक द्वितीय एवं चतुर्थ बुधवार को
समय : दोपहर 12.00 बजे से 1.00 बजे तक
राजुवास के आधिकारिक फेसबुक पेज से सीधा प्रसारण
LIVE https://www.facebook.com/RAJUVASOfficialWebPage

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी
प्राप्त करने के लिए
टोल फ्री हैल्पलाईन
1800 180 6224

''धीणे री बात्यां''
पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम
माह के तीसरे गुरुवार को
सायं 5.30 से 6.00 बजे तक
प्रदेश के 17 आकाशवाणी
केन्द्रों से प्रसारण

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया
संपादक
डॉ. दीपिका धूड़िया
डॉ. मनोहर सैन
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पत्रिका में प्रकाशित आलेख/ विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया